Roll No.: .....

Total No. of Questions : 5] [Total No. of Printed Pages : 1

W-3414(A)

M.A.(Fourth Semester) Examination, (Second Chance) June-2020

HINDI (OPTIONAL PAPER)

Paper - 404

Jayshankar Prasad

Time : Three Hours

Maximum Marks : 85 (For Regular Students) ***Maximum Marks : 100 (For Private Students)***

Minimum Pass Marks : 29 ***Minimum Pass Marks : 34***

Note : Attempt **all** questions.

नोट : **सभी** प्रश्नों के उत्तर दीजिये।

Q.1. निम्नाङ्कित गद्यांशों की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए।

क) मेरी आवश्यकताएँ परमात्मा की विभूति प्रकृति पूरी करती हैं। उसके रहते दूसरों का शासन कैसा? समस्त आलोक, चेतन्य और प्राण शक्ति प्रभु की दी हुई हैं। मृत्यु के द्वारा वही इसको लौटा लेता हैं। जिस वस्तु को मनुष्य दे नहीं सकता, उसे लेलेने की स्पर्धा संबढ़कर दूसरा दम्भ नहीं। मैं फल–मूल खाकर अञ्जलि से जलपान कर, तृण–शय्या पर आँख बन्द किये सोरहा हूँ। न मुझसे किसी को डर है और न मुझको डरने का कारण हैं। तुम यदि हटात् मुझे ले जाना चाहो तो केवल मेरे शरीर को ले जा सकते हो, मेरीस्वातन्त्र आत्मा पर तुम्हारे देवपुत्र का भी अधिकार नहीं हो सकता।

ख) युद्ध क्या गान नहीं है? रूद्र का श्रृङ्गीनाद मैखी का ताण्डव मृत्य और शस्त्रों का वाद्य मिलकर एक मैख–सङ्गीत की सृष्टि होती है। जीवन के अन्तिम दृश्य को जानते हुए, अपनी आँखों से देखना जीवन रहस्य के चरम सौन्दर्य की नग्न और भयानक वास्तविकता का अनुभव केवल सच्चे और वीर हृदय को होता है। ध्वंसमयी महामाया प्रकृति का वह निरन्तर सङ्गीत है। उसे सुननें के लिए दृष्य में साहस् और बल एकत्र करो। अत्याचार के श्मशान में ही भंगल का ,शिव का, सत्य सुन्दर सङ्गीत का समारम्भ होता हैं।

ग) संसार में स्त्रियों के लिये पति ही सब कुछ है किन्तु हाय। आज मैं उसी सोहाग से वञ्चित हो गयी हूँ। हृदय थरथरा रहा है। कण्ठ भरा आता है।– एक निर्दय चेतना सब इन्द्रियों को अवचेतन और शिथिल बनाये दे रही है। आह! (ठहरकर और निःश्वास लेकर) हे प्रभु! मुझे बलदो – विपत्तियों को सहन करने के लिए– बल दो! मुझे विश्वास दो कि तुम्हारी शरण जाने पर कोई भय नहीं रहता, विपत्ति और दुःख उस आनन्द के दास बन जाते हैं, फिर सांसारिक आतंक उसे नहीं डरा सकते हैं। मैं जानती हूँ कि मानव हृदय अपनी दुर्बलताओं में ही सबल होने का स्वाँग बनाता है–किन्तु मुझे उस बनावट से, उस दम्भ से बचा लो। शान्ति के लिए साहस दो बल दो।।

घ) विलास! तुम्हारे असंख्य साधन है। तंबभी कहाँ तक संसार की अनादि काल से की गयी कल्पनाओं ने जंगल को जटिल बनादिया, भावुकता गले का हार हो गयी, कितनी कविताओं के पुराने पत्र पतझड़ के पवन मैं कहाँ से कहाँ उड़ गये। तिस पर भी संसार में असंख्य मूक कवितायें हुईं। इसका कौन अनुमान कर सकता है? चंद्र सूर्य की किरणों की तूलिका से अनन्त आकाश के उज्ज्वल पत पर बहुत से नेत्रों ने दीप्तिमान रेखा चित्र बनाये, परन्तु उनका चिह्न भी नहीं है। जिनके कोमल कण्ठ पर गला देदेना साधारण बात थी, उन्होंने तीसरी सप्तक की कितनी मर्मभेदी तानें लगाईं, किन्तु वे स्र्वग्रासी आकाश के खोखले में विलीन हो गयी।

Q.2. हिन्दी नाटकों के विकास में जयशंकर प्रसाद का क्या योगदान रहा है? विवेचन कीजिए।

Q.3. स्कन्दगुप्त की चारित्रक विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

Q.4. रंचमंचीयता एवं अभिनेयता की दृष्टि से कामना नाटक की समीक्षा कीजिए।

Q.5. निम्नलिखित लघुउत्तरीय प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

क) लक्ष्मीनारायण मिश्र के नाटकों की विशेषताएँ

ख) सेठ गोविन्ददास के नाटकों का कथ्यशिल्प